वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति

–डॉ रीना गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

भूगोल विभाग

महाराज बिजली पासी राजकीय महाविद्यालय आशियाना

लखनऊ ।

सारांश –

जनगणना (2011) के अनुसार भारत में स्त्री एवं पुरुष अनुपात 48.53% एवं 51.47% है। किसी भी देश का संपूर्ण सामाजिक आर्थिक विकास उस देश में निवास करने वाली संपूर्ण मानवीय कार्य क्षमता पर निर्भर करता है। भारत में संपूर्ण आबादी में लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का है। अतएव बिना संपूर्ण महिला कार्य क्षमता के भारत का विकास प्रभावित होगा। वर्तमान समय में भारतीय महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अपने कार्य का संपादन प्रभावपूर्ण ढंग से कर रही है, जिस क्षेत्र में भी उन्हें अवसर मिला है।

रोजगार हेतु गांवों से पुरुषों के पलायन करने से ग्रामीण क्षेत्र में कृषि में महिलाओं की भूमिका बढ़ी है, आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 में वित्त मंत्रालय के द्वारा इस तथ्य का उल्लेख किया गया है। इसी तरह महिलाओं की भूमिका राजनीति, सेना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि में लगातार बढ़ रही है, परंतु जितनी महिलाएं इन क्षेत्रों में आगे बढ़ी हैं, वह संपूर्ण महिलाओं का कुछ ही प्रतिशत हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि आज जो महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में ध्रुव तारे की तरह जगमगा रही है वो संपूर्ण भारतीय महिला का दर्पण नहीं है। भारत में आज भी अनेक महिलाएं विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ उपेक्षा का शिकार हो रही हैं। चाहे हम वर्तमान में तीन तलाक का मुद्दा, दहेज की कुप्रथा या मंदिरों में प्रवेश को लेकर भेदभाव या बाल विवाह, बाल दुराचार या पैतृक सम्पत्ति में महिलाओं को हिस्सा न मिलना जैसी अनेक समस्याएं सामने हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में पिछड़ी हुई महिलाओं को आगे लाने हेतु प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से नीतियों के निर्धारण की आवश्यकता है। भारतीय संविधान में उल्लिखित सामान्य आर्थिक न्याय विचार अभिव्यक्ति एवं विश्वास की स्वतंत्रता जब तक प्रत्येक महिला हेतु सुनिश्चित नहीं होता तब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार की कल्पना कपोल्वित नहीं होगी।

वर्तमान समय में जरूरत इस बात की है कि हम महिलाओं को उस स्थिति तक लाएं जहां वे अपने से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकें। उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु उनकी अभिव्यक्ति को समझने की जरूरत है।

मुख्य शब्द :–

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति गरिमा पूर्ण थी। उत्तरोत्तर काल में इनकी स्थिति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। 21वीं सदी में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने को स्थापित किया है, तो वहीं कई क्षेत्रों में इनकी स्थिति अत्यंत दयनीय बनी हुई है। वर्तमान समय में निम्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति परिलक्षित होती है –

शिक्षा – शिक्षा व्यक्तित्व के विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत की मात्र 64.64% महिलाएं ही साक्षर हैं। यहां इस तथ्य का उल्लेख अनिवार्य है कि साक्षरता का तात्पर्य वैसे ज्ञान से जिसमें व्यक्ति अपनी मातृभाषा में कुछ लिख पढ़ सके।

जनगणना 2001 की तुलना में 2011 में भारत में साक्षरता 8.16% हुई है। आश्चर्य की बात तो यह है कि महिला साक्षरता वृद्धि दर पुरुषों से अधिक रही है, किंतु यदि हम संपूर्ण साक्षरता में देखें तो महिलाएं काफी पीछे हैं।

वर्तमान समय में भी यदि संपूर्ण महिला को शिक्षित करने में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है एवं वर्तमान में लड़कियों की भी पढ़ाई छोड़ने जैसी समस्याओं के पीछे निम्न कारण है :–

- लैंगिक असमानता
- घर से विद्यालय की दूरी
- विद्यालय में शौचालय का अभाव
- मनचलों के द्वारा रास्ते में लड़कियों पर अश्लील टिप्पणियां करना
- आर्थिक समस्या
- घरेलू कार्य में सहभागिता
- उच्च शिक्षण संस्थान का अभाव

स्कूल छोड़ने के मामले में सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम सर्वे (2014) की रिपोर्ट देखें तो 15–17 वर्ष के बीच की लगभग 16% लड़कियां बीच स्कूल में ही शिक्षा छोड़ देती हैं। तो वहीं इसके इतर छत्तीसगढ़ में इसी उम्र की 90.2% लड़कियां स्कूल जा रही हैं असम में 84.8% बिहार में 83.3% तो वहीं गुजरात में मात्र 14.6% लड़कियां ही स्कूल जा पा रही हैं।

लैंगिक असमानता–

यूएनडीपी की लैंगिक असमानता सूचकांक में भारत की स्थिति 108वीं है। जबकि इसी मामले में बांग्लादेश की रैंक 47 है। भारत महिला और पुरुष के बीच भेदभाव को मिटाने के मामले में चीन और बांग्लादेश जैसे अपने पड़ोसी मुल्कों से भी पीछे हैं। भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और भुगतान का कमजोर होना है। इस क्षेत्र में उसे 139वाँ स्थान मिला है।

रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 12 फ़ीसदी पुरुषों की तुलना में 66 फ़ीसदी महिलाओं को बगैर भुगतान के ही काम करना पड़ता है।

- भारत में स्वास्थ्य के मोर्चे पर महिला–पुरुष के बीच सबसे ज्यादा असमानता है। इसमें भारत को 141 वां स्थान मिला है। (UNDP)
- पुरुषों के मुकाबले महिलाएं साल में औसतन 39 दिन ज्यादा काम करती हैं लेकिन तनख्वाह और तरक्की के मामले में पीछे रह जाती हैं (द टेलीग्राम संपादकीय की टिप्पणी)

भारत में लैंगिक असमानता के कई कारण हैं जो निम्नवत हैं–

- बेटियों को पराया धन समझना
- ऐसा विश्वास की बेटियां आर्थिक रूप से मदद नहीं कर पाएंगे
- पितृसत्तात्मक व्यवस्था

- पिछड़े रीति रिवाज
- लड़कियों का शादी करके मां–बाप का घर छोड़ कर चला जाना जिससे मां, पिता बुढ़ापे में सहारा प्राप्त करने से वंचित जैसी भावना

पंचायतों में महिला :–

वैदिक काल में सभा एवं समितियां होती थी, जिसमें महिलाएं भी भाग लेती थी। उत्तरोत्तर काल में इस स्थिति में व्यापक परिवर्तन आए लेकिन 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन के द्वारा 21वीं सदी में पंचायतों में महिलाओं की भूमिका पढ़ाई गई। इसी के तहत 33% आरक्षण निर्धारित किए गए।

वर्तमान में पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी तो लगभग 50% के आसपास मिलती है लेकिन वास्तविक सत्ता उनके पास नहीं, बल्कि इनके पति, भाई या अन्य पुरुष के पास है। पंचायतों में महिलाओं के पास वास्तविक सत्ता ना होने के कारण है–

- शिक्षा का अभाव
- खुद को असमर्थ समझना
- पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण पुरुषों का वर्चस्व
- पुराने रीति रिवाज जिसमें महिला घर के बड़ी बुजुर्गों के सामने नहीं आ पाना वह सत्ता को पति ससुर के द्वारा हथिया लेना
- पर्दा प्रथा

वर्तमान भारतीय समाज में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में जहां उन्हें अवसर मिला है अपना परचम लहरा रही है। यदि हम राजनीति की बात करें तो सुषमा स्वराज, सुमित्रा महाजन, मीरा कुमार जैसी महिलाएं तो हैं लेकिन संपूर्ण लोकसभा की 543 सीटों में से मात्र 61 महिलाएं ही पहुंच पाई हैं। माननीय निर्मला सीतारमण जी का रक्षा मंत्री बनना भारतीय महिलाओं हेतु एक गर्व का दिन था। परंतु आजादी के बाद अब प्रथम बार किसी महिला का इस पद तक पहुंचना अपने आप में आश्चर्यचकित करता है। मात्र कुछ गिनी चुनी महिलाएं ही सैन्य क्षेत्र में पहुंच पाई हैं। यदि हम खेलों में ले तो साइना नेहवाल, पी.वी. सिंधु जैसी अनेक महिलाओं ने अपना परचम लहराया है। परंतु उपरोक्त विश्लेषण के बाद हम निम्न निष्कर्ष पर पहुंचते हैं –

अभी भी बहुत ग्रामीण एवं शहरी महिलाएं विभिन्न सुविधाओं से वंचित है–

- अभी भी देश में 61 लाख लड़कियां शिक्षा से वंचित हैं। (सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम सर्वेक्षण 2017)
- कुल महिला आबादी में मात्र 27% महिलाएं ही कामकाजी हैं बाकी को रोजगार नहीं प्राप्त हुआ है। (विश्व बैंक रिपोर्ट 2017)
- इसी तरह परिवहन, न्यायपालिका, उद्योग इत्यादि में महिलाओं की हिस्सेदारी नाम मात्र की है।

कुछ क्षेत्रों में वर्तमान में महिलाओं की भागीदारी काफी हद तक सुनिश्चित हुई है जो है–

- शिक्षा
- स्वास्थ्य
- बैंक

महिलाओं की अन्य समस्याएं :–

वर्तमान समय में भारतीय महिलाओं की प्रमुख समस्याओं में दहेज प्रथा, तलाक, घरेलू हिंसा, अपहरण, दुराचार जैसे मामले तो सामने आए ही हैं साथ ही साथ भारतीय महिलाएं निम्न प्रमुख समस्याओं से भी घिरी नजर आ रही हैं –

- प्रसव के दौरान मृत्यु
- पुरुषों का गांवों से रोजगार हेतु शहरों में पलायन से खेती का महिलाओं पर भार
- ग्रामीण क्षेत्रों में कैरियर चुनने की स्वतंत्रता नहीं
- ग्रामीण क्षेत्रों में अपना जीवनसाथी स्वयं से चुनने की स्वतंत्रता नहीं
- अधिकांश ग्रामीण महिलाएं आज भी पुरुषों पर आर्थिक रूप से निर्भर हैं

द टेलीग्राम संपादकीय टिप्पणी

- Altekar, A.S. the Position of women in Hindu Civilization, Motilal Banarasi Lal Varanasi 1938 and 1956
- Indra Status of Women in Ancient India, Bombay 1951
- Chakraborty K. the conflicting worlds of working mothers, Progressive Publisher, Calcutta, 1978
- Desai Neera, women in modern India, Vora and Company Bombay 1957

सुझाव

1. पिता की संपत्ति में महिलाओं को आधा हिस्सा दिया जाना कानूनी रूप से वैध है लेकिन अधिकांश महिलाएं ना तो इसे लेती हैं और ना ही दिया जाता है। यदि उनको अनिवार्य रूप से पिता की संपत्ति में आधे का हिस्सेदार बना दिया जाए तो निम्न समस्याऐं सुलझ सकती है–
    - धन के लालच में पति/सास–ससुर महिला पर अत्याचार नहीं करेंगे।
    - भाई को यह लालच रहेगा कि यदि बहन से अच्छा रिश्ता रहेगा तो बहन संपत्ति को उपयोग करने का अधिकार हमें दे देगी।
    - आज महिलाओं के ऊपर यदि ससुराल पक्ष से अत्याचार होता है तो था तलाक की बात आती है तो महिला के पास गुजर–बसर करने व रहने तक का कोई ठिकाना नहीं होता यदि उन को अनिवार्य रूप से इस में सहभागी बना दिया जाएगा तो उक्त परिस्थिति में महिला के जीवन यापन हेतु संसाधन उपलब्ध होंगे।

2. स्कूली शिक्षा को नैतिक परक बनाने पर जोर दिया जाए तथा घर परिवार में बच्चों में वो संस्कार वो सोच भरी जाए जिससे बच्चे सदा सही मार्ग का अनुसरण करें। आज जिस तरह से छोटी बच्चियों का यौन शोषण हो रहा है उनके पहनावे का नहीं बल्कि हमारी विचित्र सोच व नैतिक रूप से पतन का परिणाम है। अतः स्कूल कॉलेजों में प्रारंभिक स्तर से नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाना आवश्यक है।

3. ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों एवं महिलाओं में कई गुण छिपे हैं जो अवसर की उपलब्धता न होने की वजह से दबी पड़ी है चाहे वह आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक गुण हो। आवश्यकता इस बात की है कि गांवों की लड़कियों एवं महिलाओं के गुण को आगे लाने हेतु पंचायत स्तर